मानव स्वास्थ्य और रोग– जब शरीर के सभी अंग प्रन्यअंग आपस में बाध्य वातावरण के साथ उचित एवं वांशिक संतुलन बनाए हुए सही कार्य करते है तो इस स्थिति स्वास्थ्य कहते है अर्थात स्वस्थ व्यक्ति समाजिक शारीरिक व मानसिक संतुलन की स्थिति में होता है।

कक्षा- 12

W.H.O. - World Health Organization

मानसिक, शारीरिक रूप, समाजिक, व्यावहारात्मक

कक्षा- 12

स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारण – स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले तीन कारण है।

1. आनुवांशिक
2. संक्रमण
3. जीवनशैली

1. **आनुवांशिक विकास** – वे विकार जो जीन या गुणसूत्रों की असमानता के कारण होते है तथा पीढ़ी देर पीढ़ी वंशागत है मानव स्वास्थ्य को प्रीाावित करते है।

2. **संक्रमण** – अनेक रोगाणुओं के सम्पर्क से कई प्रकार के विकार उत्पनन होत है जो मानव स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालते है।

संक्रमण रोग	असंक्रमण रोग
एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति किसी रोगकारक की उपस्थिति मे फैलती	कैंसर

कक्षा- 12

3. जीवनशैली – मनुष्य के रहने का तौर तरीका जिसके अन्तगर्त खान–पान वयायाम विश्राम मानसिक तनाव आते है जीवन शैली कहलाते है, जीवनशैली में अनियमितता के कारण मानव स्वास्थ्य प्रभावित होते है।

मानव में सामान्य रोग – मानव में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते है। इन रोगो को उत्पन्न करने वाले काराको को रोगाणु कहते है। य विषाणु, जीवाणु, प्रोटोजोआ कृमि आदि हो सकते है, मनुष्य में उत्पन्न होने वाले कुद सामानय रोग निम्न है।

- जीवाणु जनित रोग
  - टाइफाइड
  - न्यूमोनिया
- विषाणु जनित
  - सामान्य जुकाम
- प्रोटोजोआ जनित रोग
  - मलेरिया
- कवक फंजाई
  - दाद
- कृमि — हेल्मिंथिज
  - एस्केरियासिस
  - फाइलेरियासिस

जीवाणु जनित रोग

1 टाइफाइड

रोग कारक – साल्मोनेला टाइफी (जीवाणु)

रोग वाहक – दूषित जल व भोजन

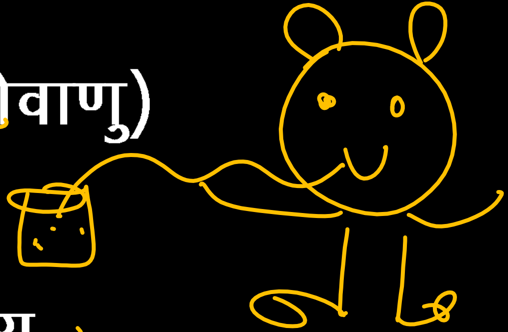

प्रभावित अंग – छोटी आंत व आमाशय

लक्षण – इस रोग में लम्बे समय तक बुखार आता है। आमाशय की भित्ति में सूजन व दर्द होता है,

इसमें अपज, कमजोरी, सिरदर्द जैसी समस्या होती है अत्यधिक गंभीर स्थिति होने पर आंत में छेद बन जाते है। जिससे व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है।

उपचार – चिकित्सक के द्वारा विडाल परीक्षण से इस रोग की पहचान की जाती है तथा औषधियो के द्वारा रोग को उपचारित किया जाता है। विडाल परीक्षण में रूधिर की जाँच की जाती है।

2. निमोनिया

रोग कारक – स्टेप्टो कोकस न्युमोनी

रोग वाहक – संक्रिमित द्वारा खासने व छिकने पर य जीवाणु सूक्ष्म बूंदो के साथ निकल कर स्वस्थ व्यक्ति को सक्रंमित करते है।

प्रभावित अंग – फेफडो की वायु दूषिका तथा श्वसन तंत्र

लक्षण – बुखार आना, सिरदर्द, खासी तथा साँस लेने में कठिनाई तथा अधिक गंभीर स्थिति में होठो का नीला होना।

उपचार – चिकित्सक द्वारा उचित प्रकार की औषधियों से इस रोग को उपचारित किया जाता हैं

3. सामान्य जुकाम – यह एक विषाणु जनित रोग है जो राइनोवाइरस नामक विषाणु द्वारा फैलता है यह विषाणु नाक की आंतरिक झिल्ली व श्वसन मार्ग को सक्रमित करता है, जिससे नाक में खुजली, बार–बार छीक आना, खांसी सिरदर्द जैसे लक्षण दिखाई देते है। यह रोग सामान्यतः संक्रमित व्यक्ति द्वारा प्रयोग में ली गई वसतुओं के प्रयोग से फैलता है, सामान्यतः 3–4 दिन अविधि के पश्चात यह रो सही हो जाता है।

4. एस्केरिएसिस – कृमि जनित रोग है।

रोग कारक – एस्केरिस लुम्ब्रीकोइडस

रोग वाहक – दूषित जल ओर भोजन में उपस्थित इनके निषेचित अंडो के द्वारा

संक्रमण – दूषित भोजन सब्जियों फलो व पानी के द्वारा

प्रभावित अंग – पाचन तंत्र में छोटी आँत

लक्षण – पेट दर्द, उल्टियां, सिरदर्द आनितरिक रक्त स्त्रात्र पेशियो में आनितरिक रक्त स्त्राव पेशियों मे

बचाव – जल को बालकर, छानकर पीना चाहिए तथ स्वच्छ भोजन का सेवन करना

5. फाइलेरियोसिस–

रोग कारक – वुचेरिया ब्रेनकोफटाई

रोग वाहक – मादा मच्छरो के द्वारा रक्त चूसने से

प्रभावित अंग – लसिका वाहिनियां व लसिका

लक्षण – बुखार आना, जगह–जगह से शरी का फूल जाना, हाथ व पैरो का फूल जाना, जनन अगों मे कुरूपता आना।

वुचेरिया एक तंतुनुमा धागे के समान कृमि है जो दोनो सिरो से मुड़ा हुआ रहता है इससे ग्रसित रोग में व्यक्ति का पैर फूल कर हाथी के समान हो जाता है इसलिए इसे हाथी पाव रोग भी कहते है इसके लिए हमे अपने आस–पास मच्छरो को पनपने नहीं देने चाहिए।

6. दाद (रिंग वर्ग)

रोग कारक – माइक्रोस्पोरम (कवक)

संक्रमण – दूषित मिट्टी तथा रोग ग्रसित व्यक्तियों के सम्पर्क में आने पर

लक्षण – त्वचा एवं नाखून में सूखापन, पैर की अंगुलियों के बीच में कवको की वृद्धि से खुजल होना।

7. अमीबायसिस –

रोग कारक – एन्टाअमीबा हिस्टोलिका

वाहक – घरेलू मक्खी

स्त्रोत – दूषित जल और खाद्य पदार्थ

प्रभावित अंग– आंत और पाचन तंत्र

लक्षण – पेट दर्द, दस्त, दस्तक के साथ रक्त का आना।

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।

धन्यवाद